शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर

हिन्दी विभाग प्रतिवेदन

प्रस्तावनाः–

अव्यक्त की अभिव्यक्ति भाषा है। भाषा हमारे भावों एवं विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम है। भाषा हमारी संस्कृति की संवाहक है। भाषा ज्ञान के बिना हम अपने विचारों और भावों को ठीक ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर सकते। चाहे राजनीति, समाज शास्त्र, वाणिज्य, विज्ञान इत्यादि किसी भी विषय का ज्ञान, भाषा के माध्यम से ही अभिव्यक्त होता है; इसीलिये भाषा का अध्ययन, पाठन, पठन और मनन प्रत्येक के लिये अनिवार्य है। इसी उद्देश्य से सभी संकायों के पाठ्यक्रमों में विषय अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया गया है। आधार पाठ्यक्रम के रूप में हिन्दी भाषा का अध्यापन कला, वाणिज्य, कम्प्यूटर इत्यादि समस्त संकायों में होता है। इसका उद्देश्य छात्राओं में वाचन, श्रवण, पठन, चिन्तन, मनन के साथ अभिव्यक्ति कौशल की अभिवृद्धि करना है। दैनिक जीवन में वे अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा के मानक रूप व्यवहार का उपयोग करें। रोजगार के क्षेत्र में भी तबतक सफलता प्राप्त नहीं होती जबतक कि भाषिक अभिव्यक्ति सशक्त न हो। साक्षात्कार की सफलता भी भाषिक अभिव्यक्ति पर निर्भर है। अतः छात्राओं की भाषा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठ्य सामग्री सिर्फ भाषा ज्ञान ही नही करती; बल्कि भाषा ज्ञान के साथ–साथ हमारी संस्कृति, सभ्यता, ऐतिहासिकता,देश विदेश के सामान्य ज्ञान व सकारात्मक सोच भी विकसित करती है। विज्ञान के अति आवश्यक तत्वों, खोज, ब्रह्माण्ड, वनस्पति, जीव जन्तु, वैज्ञानिक परिवर्तन, चमत्कारों के साथ–साथ वैज्ञानिक सोच भी विकसित करती है। हिन्दी भाषा के अध्यापन हेतु प्रत्येक कक्षा में समय सारणी के अनुसार साप्ताहिक एक–एक कालखण्ड निर्धारित है।

हिन्दी का दूसरा महत्वपूर्ण रूप साहित्य का है। साहित्य सहित का भाव साहित्य है। जो हित सहित हो। हित मित प्रिय वचन साहित्य है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज साहित्य में प्रतिबिम्बित है। साहित्य का उद्देश्य मनुष्य में

स्वस्थ मानसिकता का विकास करना है। मन के विकारों का विवेचन करता है और स्वस्थ मनोरंजन के साथ आनन्द प्रदान करता है। इस उद्देश्य से हिन्दी साहित्य का अध्यापन एक मुख्य वैकल्पिक विषय के रूप में किया जाता है। साहित्य में सिर्फ मनोरंजन ही नही उसे रोजगार के साथ जोड़कर प्रयोजन मूलक हिन्दी का भी पाठ्यक्रम में अध्यापन किया जाता है। पत्रकारिता, दूरदर्शन, अनुवाद, कार्यालयीन पत्र व्यवहार, भाषा कप्यूटिगं हिन्दी अधिकारी इत्यादि के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं विकसित हो रही है। महाविद्यालय में सी.सी.ई.(सतत आंतरिक मूल्यांकन) के माध्यम से एवं जाब ओरिएन्टेड प्रोजेक्ट वर्क (रोजगारोन्मुखी परियोजना कार्य) के माध्यम से इसमें रोजगार की संभावनाओं की खोज स्वयं विद्यार्थी करता है। हिन्दी साहित्य का अध्यापन कला संकाय की प्रत्येक कक्षा में प्रतिदिन होता है। साप्ताहिक छः काल खंण्डो में बी.ए. की तीनों कक्षाओं में प्रतिदिवस एक काल खंण्ड में हिन्दी साहित्य का अध्यापन किया जाता है। साहित्य के माध्यम से छात्राओं में स्वस्थ्य संस्कार, मानसिकता, सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं की समझ और रस, छन्द, अलंकार, शब्द शक्ति, शब्दगुण इत्यादि कलात्मक कौशल की समझ विकसित हो रही है। वर्तमान परिवेश के साथ जीवन की जटिल समस्याओं के निराकरण की समझ साहित्य के द्वारा विकसित हुई है। शिक्षा का उद्देश्य छात्राओं में ज्ञान के साथ साथ उनके व्यक्तित्व का विकास करना है। इस हेतु उन्हे पुस्तकालय से ज्ञानवर्धक पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती है। पुस्तकालय में साहित्यिक पुस्तके, शब्दकोश तथा समीक्षात्मक ग्रंथ उपलब्ध है। छात्राओं को उन्हे पढ़ने के लिये प्रेरित किया जाता है। ताकि उनकी शब्द शक्ति एवं लिखने की क्षमता बढ़े। कक्षा में लघुउत्तरीय प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाते है तथा छात्राओं के लिये प्रश्नोत्तरी तैयार करके विषय परीक्षण किया जाता है एवं उनका मूल्यांकन किया जाता है। उनमें बोलने की क्षमता बढ़ने के लिये कक्षा में पढ़ाये जाने वाले ऐकांकी तथा नाटकों का कक्षा में अभिनय किया जाता है। जिससे उनमें नाटकों के प्रति रूचि उत्पन्न होती है।

हिन्दी विभाग की स्थापना :– इस महाविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना वर्ष 1984 में हुई। हिन्दी विभाग में शासन स्तर से एक सहायक प्राध्यापक का पद स्वीकृत है। महाविद्यालय में हिन्दी भाषा का अध्ययन सभी संकायों के सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। हिन्दी साहित्य विषय वैकल्पिक रूप में कला संकाय

की छात्राएं अपनी रूचि के अनुसार चयन कर सकती है। छात्राओं की प्रमुख भाषिक समस्याओं का समाधान हिन्दी विभाग करता है। व्यावसायिक क्षेत्र में भी हिन्दी का प्रयोग अधिक होने लगा । हिन्दी विभाग वर्तमान समसामयिक आवश्यकतानुसार छात्राओं के ज्ञान को निरन्तर संशोधित, परिवर्द्धित तथा परिमार्जित करता रहता है।

क्षेत्र विस्तार :– महाविद्यालय की समस्त कक्षाओं की छात्राओं की सहभागिता हिन्दी विभाग में होती है। यह जिले का एक मात्र कन्या महाविद्यालय है जिसमें आसपास के ग्रामीण अंचल से छात्राएं अध्ययन करने आती हैं। अधिकतर छात्राएं पिछड़ा वर्ग की है, जिनकी भाषिक अभिव्यक्ति क्षमता बहुत कमजोर होती है। हिन्दी विभाग की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उन्हें धनात्मक पुनर्बलन से प्रोत्साहित किया जाता है।

पाठयक्रम :–महाविद्यालय में पढाए जाने वाले पाठयक्रम का निर्धारण विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय से सम्बद्ध होने से उसके केन्द्रीय अध्ययन मंडल द्वारा निर्धारित पाठयक्रम के अनुसार ही अध्यापन किया जाता है।

महाविद्यालय में प्रवेशित स्नातक स्तर पर 98 प्रतिशत छात्राएं अपना निर्धारित पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण करती है। विवाह इत्यादि कारणों से सत्र के मध्य में **अध्ययन अधूरा छोडने वाली छात्राओं की संख्या मात्र 02 प्रतिशत है**

वर्तमान वर्ष में हिन्दी साहित्य विषय में पंजीकृत छात्राओं का आरक्षणवार विवरण :–

कक्षा	अनु. जाति	अनु.ज. जाति	पिछड़ा वर्ग	विकलांग	सामान्य	योग
बी.ए. प्रथम	44	30	73	00	05	**152**
बी.ए. द्वितीय	24	16	59	00	05	**104**
बी.ए. तृतीय	19	13	51	00	01	**84**
योग						**340**

वर्तमान वर्ष में हिन्दी भाषा विषय में पंजीकृत छात्राओं का आरक्षणवार विवरण :–

कक्षा	अनु. जाति.	अनु.ज जाति	पिछड़ा वर्ग	विकलांग	सामान्य	योग
बी.ए. प्रथम	57	43	104	01	09	**213**
बी.ए. द्वितीय	45	27	87	0	10	**169**
बी.ए. तृतीय	43	24	75	02	04	**146**
बी.काम प्रथम	34	05	89	0	18	**146**
बी.काम द्वितीय	20	03	107	0	16	**146**
बी.काम तृतीय	31	03	79	1	15	**128**
बी.बी.ए. प्रथम	05	0	14	0	07	**26**
बी.बी.ए. द्वितीय	07	0	19	0	01	**27**
बी.सी.ए. द्वितीय	0	0	0	0	02	**02**
बी.सी.ए. तृतीय .	05	0	07	01	01	**13**
बी.एस.सी. प्रथम	23	15	71	0	14	**123**
बी.एस.सी. द्वितीय	13	12	76	01	08	**109**
बी.एस.सी. तृतीय	12	09	62	0	14	**97**
						1345

विगत 5 वर्ष में हिन्दी विषय में पंजीकृत छात्राओं का विवरण :–

कक्षा	**2014-15**	**2015-16**	**2016-17**	**2017-18**	**2018-19**	**2019-20**
हिन्दी साहित्य	140	146	167	210	261	340
हिन्दी भाषा	790	892	1059	1168	1257	1345

हिन्दी विभाग का विगत 5 वर्षों का परीक्षा परिणाम (प्रतिशत में) :–

कक्षा	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20
हिन्दी साहित्य	96	97	96	97	97	
हिन्दी भाषा	99	99	98	99	98	

हिन्दी विभाग में शासन स्तर से संचालित पाठ्यक्रम का विवरण :–

पाठयक्रम	अध्ययन स्तर	छात्राओं की संख्या
हिन्दी साहित्य	स्नातक	340
हिन्दी भाषा	स्नातक	1345

हिन्दी विभाग कार्यरत शिक्षक एवं कर्मचारियों की संख्या :–

स्वीकृत पद	01
कार्यरत नियमित शिक्षक	01

हिन्दी विभाग में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यताः–

शैक्षणिक योग्यता	महिला	पुरूष	योग
उच्चतम योग्यता पी–एच डी धारक शिक्षक	-	01	01

हिन्दी विभाग के शिक्षकों का साप्ताहिक कार्य भार विवरणः–

शिक्षक का नाम	सैद्धांतिक	स्मार्ट क्लास शिक्षण	सेमी	ट्यूटोरियल	पुस्तकालय /इन्टरनेट
डॉ गणेश लाल जैन	30	06	-	-	06

हिन्दी विभाग में पंजीकृत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की संख्या :–

क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या
सीहोर शहरी क्षेत्र	98
सीहोर जिला ग्रामीण क्षेत्र	242

वर्तमान वर्ष में अध्ययन अधूरा छोडने वाली छात्राओं की संख्या :–

पंजीकृत छात्राऐं	त्यागी	कारण
353	13	विवाह के कारण

रोजगार/उच्चशिक्षा की ओर प्रगति :–

विषय वस्तु	छात्राओं का प्रतिशत		
स्नातकोत्तर उच्चशिक्षा की ओर प्रगति	60%		
रोजगार	शासकीय	अशासकीय	स्वरोजगार
	4%	30%	6%

अध्ययन सामग्री का मुख्य स्रोत :– हिन्दी विभाग की अध्ययन सामग्री का मुख्य स्रोत महाविद्यालय का समृद्ध ग्रंथालय है, जिसमें विविध प्रकार के संदर्भ ग्रंथ व पाठय पुस्तकें प्रतिवर्ष यू.जी.सी.,जनभागीदारी मद से क्रय की जाती है। छात्राएं कक्षा के अतिरिक्त समय में पुस्तकालय में बैठ कर अध्ययन करती है। पुस्तकालय में रचना, मध्यप्रदेश संदेश, वीणा इत्यादि हिन्दी की पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध रहती है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा मिशन के अंतर्गत पुस्तकालय को इंटरनेट की सुविधा छात्राओं को उपलब्ध करायी गई है जिसके माध्यम से छात्राएं स्वयं इन्टरनेट पर सर्च करके अपने ज्ञान में अभिवृद्धि करती है।

पुस्तकालय में हिन्दी विभाग की पुस्तकों का विवरण :–

पुस्तक का प्रकार	पुस्तकों की संख्या
• पाठय पुस्तक	1417
• संदर्भ ग्रंथ	945
• कुल पुस्तकें	2362
• पत्र पत्रिकाएं	03
• समाचार पत्र	04

शिक्षण पद्धति :–हिन्दी भाषा व साहित्य के अध्यापन में विभिन्न दृश्य–श्रव्य माध्यमों उपयोग किया जाता है। मुख्यतः व्याख्यान पद्धति के साथ कविता का सस्वर तथा व्याख्या कर उसका सम्यक विश्लेषण किया जाता है। आवश्यकतानुसार चित्र, तालिका, अभिनय के माध्यम से विषय की गहनता से छात्राओं को परिचित कराया जाता है । सप्ताह में प्रतिदिन 01 लिक्विड क्रिस्टल डिस्प्ले (एल. सी. डी.) प्रक्षेपक द्वारा कठिन विषयवस्तु को इंटरनेट से सर्च (खोज)कर समझाया जाता है। अध्ययन सामग्री छात्राओं को व्हाटसेप समूह में भी उपलब्ध करायी जाती है ।

उच्च गुणात्मक अकादमिक विकास :– छात्राओं के अकादमिक स्तर में गुणात्मक अभिवृद्धि हेतु समय–समय पर छोटे–छोटे सेमीनार तथा संगोष्ठी छात्राओं द्वारा उनकी कक्षा के स्तर पर आयोजित की जाती है। इसमें छात्राएं वाचनालय में जाकर अध्ययन कर आपसी परिचर्चा द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान करती है।

छात्राओं के अलावा प्राध्यापक भी अपने उच्च गुणात्मक अकादमिक विकास के लिए समय– समय पर शोध संगोष्ठियों में अपने शोध आलेखो का वाचन करने जाते है।

शोध व प्रशिक्षण :–महाविद्यालय का हिन्दी विभाग का शोध, प्रशिक्षण, साक्षात्कार, इत्यादि अकादमिक गतिविधियों के साथ सामाजिक पाठयेतर गतिविधियों में योगदान करता रहा है। **हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. गणेश लाल जैन बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल में शोध** निर्देशक के रूप में पंजीकृत है। विगत वर्षों में उनके मार्गदर्शन व सह–निर्देशन में 03 विद्यार्थियों को पीएच.डी की उपाधि स्वीकृत हुई है। उनके मार्गदर्शन व निर्देशन में 08 विद्यार्थियों पीएच.डी उपाधि हेतु शोधकार्य कर रहे है।

अन्तर्महाविद्यालयीन गतिविधियॉ :– युवा उत्सव के माध्यम से जिले के अन्य महाविद्यालयों के साथ वाद–विवाद, रचनात्मक लेखन इत्यादि साहित्यिक गतिविधियॉ आयोजित की जाती है । महाविद्यालय से विश्वविद्यालय परिक्षेत्र के विभिन्न महाविद्यालयों में समय–समय पर जाकर हिन्दी विषय के परियोजना कार्य का साक्षात्कार द्वारा मूल्याकंन किया जाता है।

हिन्दी के माध्यम से रोजगार/उच्चशिक्षा की ओर प्रगति :– वर्तमान में महाविद्यालय में स्नातक कक्षाएं संचालित है अतः अधिकतर छात्राएं स्नातक स्तर की पढाई पूर्ण कर स्नातकोत्तर स्तर की पढाई हेतु स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्रवेश ले लेती है। अतः स्नातक स्तर पर रोजगार प्राप्ति का प्रतिशत कम ही रहता है।

महाविद्यालय में प्रयोजन मूलक हिन्दी का भी पाठ्यक्रम में अध्यापन किया जाता है। पत्रकारिता, दूरदर्शन, अनुवाद, कार्यालयीन पत्र व्यवहार, भाषा कप्यूटिगं हिन्दी अधिकारी इत्यादि के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाये विकसित हो रही है। महाविद्यालय में सी.सी.ई.(सतत आंतरिक मूल्यांकन) के माध्यम से एवं जाब ओरिएन्टेड प्रोजेक्ट वर्क (रोजगारोन्मुखी परियोजना कार्य) के माध्यम से इसमें रोजगार की संभावनाओं की खोज स्वयं विद्यार्थी करता है।

उपर्युक्त प्रतिवेदन में उल्लेखित प्रयासों से हिन्दी विभाग अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कितना सफल हुआ है इसका मूल्यांकन कर विद्वतजन मुझे अनुगृहीत करेगें।

डॉ. गणेश लाल जैन
प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर